बी०ए० पार्ट - II
हिन्दी प्रतिष्ठा
तृतीय पत्र

प्रश्न - हिन्दी - साहित्य में रीतिकालीन साहित्य को नवीन मार्ग क्यों कहा जाता है ?

उत्तर - रीतिकाल का साहित्य हिन्दी - साहित्य में एक भिन्न प्रकार का साहित्य है। भक्ति - काल में पारलौकिकता की प्रधानता रही। हिन्दी - साहित्य के आदि काल में अनेक साहित्यिक गतिविधियों का समिश्रण दृष्टिगोचर होता है, जबकि रीतिकाल के साहित्य में पारलोक तथा मोक्षादि की चिन्ता नहीं। इस साहित्य में जीवन के प्रति भौतिक दृष्टिकोण को अपनाया गया, अतः इसे भौतिकवादी साहित्य के नाम से भी अभिहित किया जा सकता है, किन्तु इसे लोक - साहित्य नहीं कहा जा सकता, क्योंकि लोक - साहित्य में वैयक्तिकता का अभाव हुआ होना अनिवार्य होता है। पर रीतिकाल साहित्य में इस तत्व का नितान्त अभाव है। राजनीति के घोर पराजयमय उस युग में रीतिकालीन साहित्यकार में वैयक्तिकता का अभाव तनिक असम्भव भी था। इस साहित्य को न तो शुद्ध शास्त्रीय साहित्य की कोटि में रखा जा सकता है और न ही इसे पूर्णतः लौकिक साहित्य कहा जा सकता है। इस साहित्य की अपनी ही कोटि है जो लोक - साहित्य तथा सिद्धान्त - साहित्य के बीच की वस्तु है। रीतिकाल में पाण्डित्य प्रदर्शन - प्रवृत्ति का सभी क्षेत्रों में साम्राज्य स्थापित हो चुका था। साहित्यिक क्षेत्र में भी उसी प्रदर्शन - प्रवृत्ति का बोल - बाला रहा। पांडित्य - प्रदर्शन की इस प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप रीति - साहित्य में कवि कर्म तथा आचार्य कर्म का एक साथ निर्वाह होता रहा।

Scanned by TapScanner

इस काल की कविता में भावुकता और कला का अद्भुत समन्वय हुआ। वास्तव में हिन्दी वाङ्मय के इतिहास में रीतिकालीन कवि ने ही काव्य को शुद्ध कला के रूप में ग्रहण किया। रीतिकालीन कविता अपना अपना साध्य स्वयं थी। अपने शुद्ध रूप में रीति कविता न तो धार्मिक प्रचार अथवा भक्ति का माध्यम थी और न ही सामाजिक सुधार अथवा राजनीतिक सुधार की प्रचारिका थी। इस काल के साहित्य का अपना ही महत्व था।

रीति-परम्परा ने एक नवीन मार्ग कवि-प्रतिभा के विकास के लिए खोल दिया जिसका अवलम्बन करके अपनी प्रवृति और अभिरुचि के अनुसार कुछ भी लिखा जा सकता था। लौकिक जीवन से अनुराग रखने वाले राजयाश्रित कवियों के लिए यह मार्ग विशेष रूप से सहायक हुआ क्योंकि उन्हे चारण-कवियों के समान केवल यशोगान के स्थान में रीति-पद्धति पर लिखकर आश्रयदाता को चमत्कृत करने तथा रिझाने का अवसर मिला। इस प्रकार रीति-परम्परा का अपने युग के लिए ऐतिहासिक महत्व है। हिन्दी के रीतिकाल का साहित्य जनपथ का साहित्य न होकर राजपथ का साहित्य है। संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश-भाषाओं के साहित्य में यह परम्परा पहले से ही विद्यमान थी। रीतिकालीन साहित्य में पुरानी परम्परा से हटकर कुछ नवीनता का समावेश हुआ। संस्कृत और प्राकृत आदि भाषाओं के साहित्य में कलात्मक विलासिता थी, किन्तु हिन्दी के रीति-साहित्य में क्रमशः विलासिता का प्राधान्य होने लगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रीति का साहित्य हिन्दी-साहित्य में एक नवीन मार्ग के रूप में आया।

Scanned by TapScanner